आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ. किशोर सोनवाने 'अनीस'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ किशोर सोनवाने 'अनीस'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-195-4

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण-2020, डॉ किशोर सोनवाने 'अनीस'
मूल्य-50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY DR. KISHOR SONWANE ANEES

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	खफ़ा है किसी की किसी बात पर से	6
2.	कोई बागबाँ नहीं है	7
3.	सलाम दूर से मेरा है राजधानी को	8
4.	मजा हमसे पूछिये	9
5.	जान ले इतना	10
6.	लिबास महके न महके	11
7.	पूछ तुमने लिया दास्ताँ देखिये	12
8.	बातों से हम तो बहलाये जाते हैं	13
9.	नींव राजधानी की	14
10.	कल तलक थे	15
11.	मानता हूँ	16
12.	जाने किधर गए	17
13.	बातें कहाँ तक पहुँची	18
14.	पनप न पायेंगे रिश्ते	19
15.	शब का खयाल	20
16.	माँझी का सहारा	21

खफ़ा है किसी की किसी बात पर से

खफ़ा है किसी की किसी बात पर से।
बयाँ हो रहा माज़रा चश्मेतर से।।

किया जुर्म माना अंधेरे में छिपकर।
बचेगा न लेकिन खुदा की नजर से।।

शहर हादसों का बदल देगा चेहरा।
पता रखके निकलो सदा अपने घर से।।

समझता था महफ़ूज कल तक वो लेकिन।
उठा कांप साहिल भी पागल लहर से।।

डराओ न मुझको ये मुर्दे दिखाकर।
मुझे खौफ लगता है जिंदा बशर से।।

कुल्हाड़ी लिए कोई आया जो कल था।
परिन्दे लगे आज जाने शजर से।।

रही एक तहजीब दादी के रहते।
कभी भी न सरका दुपट्टा ही सर से।।

कोई बागबाँ नहीं है

न बहार है चमन में कोई बागबाँ नहीं है।
लो उजड़ गयी है बस्ती यहाँ अब मकाँ नहीं है।।

कहा दर्द गैर का है मेरे गम समझ न लेना।
जिसे गुनगुना रहे हो मेरी दास्ताँ नहीं है।।

न उड़ान ऊँची उड़नी न दो हौसले मुझे तुम।
ये जमीं मेरी है बेशक मेरा आसमाँ नहीं है।।

न ऊला में कोई दम है न तो लाजवाब सानी।
उसे शेर क्या कहेंगे जहां गम निहाँ नहीं है।।

मेरे गाँव में सियासत चली इस कदर है आई।
नहीं आरती कहीं पर कहीं पर अजाँ नहीं है।।

है उदास दर ये आँगन लगे ये हिसार सूना।
न ये घर रहा है घर सा यहाँ जबसे माँ नहीं है।।

उसे ढूँढने चला है तू भी बेवजह जहाँ में।
जरा ये बता दे मुझको कि खुदा कहाँ नहीं है।।

सलाम दूर से मेरा है राजधानी को

सलाम दूर से मेरा है राजधानी को।
बहोत तरसा हूँ मैं एक बून्द पानी को।।

मकाँ ने गाँव से रक्खा है राब्ता मेरा।
रखा सँभालके पुरखों की उस निशानी को।।

अजीब दौर है साहिब कि काँटों को बोकर।
रखा है हाशिये में हमने रातरानी को।।

घरों में देखिए है कैद आज बूढ़ी माँ।
चलन में रखते कहाँ लोग शै पुरानी को।।

उठाके सर को चला मैं तो कह दिया अकड़ू।
दिखादे रोक के दरिया की तू रवानी को।।

बवाल मुल्क में सारे मचा हुआ है मगर।
समझ न पाई है आवाम हुक्मरानी को।।

हो आँख उसकी भी नम ये यहाँ जरूरी नहीं।
सुना है गौर से उसने मेरी कहानी को।।

तमाम हादिसे यूँ जीस्त के बयाँ ये करे।
मजाक समझा कभी तुमने सावधानी को।।

मजा हमसे पूछिये

यूँ गम से दोस्ती का मजा हमसे पूछिये।
गुरबत में जिंदगी का मजा हमसे पूछिये।।

खामोश आँधियों में हुए हैं चिराग भी।
लेकिन ये ज्यादती का मजा हमसे पूछिये।।

ऊँचे महल तुम्हारे मुबारक तुम्हें मियाँ।
बस्ती की झोपड़ी का मजा हमसे पूछिये।।

हमने यूँ कुम्भ में भी नहाया तो है मगर।
वो गाँव की नदी का मजा हमसे पूछिये।।

मय में कहाँ है इतना नशा ये बताइये।
आँखों की मयकशी का मजा हमसे पूछिये।।

बनकरके जुगनू लड़ते रहे हम तमाम रात।
ज़ुल्मत से दुश्मनी का मजा हमसे पूछिये।।

हिस्से में आया पानी ये उनका नसीब है।
ताउम्र तिश्नगी का मजा हमसे पूछिये।।

होने को तो हुए हैं सुखनवर कई मगर।
गालिब की शायरी का मजा हमसे पूछिये।।

जान ले इतना

जान ले इतना गमे दिल को छुपाने वाले।
अश्क तो पलकों तलक बहके हैं आने वाले।।

मंजिलों की न कभी शक्ल ही देखा उसने।
कितना महरूम है तू राह दिखाने वाले।।

फूस का तेरा मकाँ भी है तुझे याद रहे।
घर पे यूँ आज मेरे बिजली गिराने वाले।।

कौन तेरे हैं यहाँ मुड़के तू किसको देखे।
देके आवाज नहीं कोई बुलाने वाले।।

फैसला आज ही हो कल यहाँ देखा किसने।
कल नहीं हम भी इधर लौटके आने वाले।।

झोंकके आग में ये मुल्क हुआ क्या हासिल।
सब नदारद हैं वो कोहराम मचाने वाले।।

मानता हूँ कि मेरे दोस्त हैं सारे लेकिन।
हैं जनाजे को सभी काँधा लगाने वाले।।

लिबास महके न महके

लिबास महके न महके हुनर महकना था।
फ़लक पे उसको किसी रोज तो चमकना था।।

पता था तुझको कि ये शह्र आज जलना था।
हवा भी गर्म थी घर से नहीं निकलना था।।

समझ न पाये कभी हम मिजाज मौसम का।
रहे हैं अब्र खफ़ा जब उन्हें बरसना था।।

हवा की साजिशें उसके खिलाफ थी लेकिन।
जला है शान से दीपक उसे तो जलना था।।

खता तुम्हारी जरा भी नहीं यकीं मानो।
लिखा हमारे मुकद्दर में बस तड़पना था।।

दरार बढ़ने लगी तब यकीन हो आया।
दिवारें रेत की थी तय मकान ढहना था।।

थी बोलने की जरूरत तो तुम रहे खामोश।
लहू तुम्हारा सही वक्त पे उबलना था।।

पूछ तुमने लिया दास्ताँ देखिये

पूछ तुमने लिया दास्ताँ देखिये।
मैं हूँ बुझते दिये का धुँआ देखिये।।

शौक से आप भी गुनगुनाते रहे।
मेरे अशआर में गम निहाँ देखिये।।

गिरह -
इक शरर राख से उठके शोला हुआ।
आग पहुंची कहाँ से कहाँ देखिये।।

बेबसी में ये लहरें तड़पती हुई।
इक समन्दर का फिर भी गुमाँ देखिये।।

जिसको सीने से अब तक लगाये रखा।
दिल न मेरा रहा हमजुबाँ देखिये।।

खौफ़ कोरोना का आज है चार सू।
कितनी वीरान सड़कें मकाँ देखिये।।

किसलिये छेद सीने में करना 'अनीस'।
ये धरा है हमारी भी माँ देखिये।।

बातों से हम तो बहलाये जाते हैं

बातों से हम तो बहलाये जाते हैं।
क्योंकर दिल को ख्वाब दिखाए जाते हैं।।

रूठ अगर जाये बहारें गुलशन से।
फूल उमीदों के मुरझाए जाते हैं।

चाहे जिसकी हो खता क्या लेना है।
मेरे सर इल्जाम लगाए जाते हैं।।

ले डूबेगी मौजें कभी समन्दर की।
साहिल पे क्यों शहृ बसाए जाते हैं।।

जंग जीस्त की है इसमें तो तुर्रम खां।
पिछवाड़े में पूँछ दबाए जाते हैं।।

देखके मंजर सूरज भी रो देता है।
अश्कों से जब दीप जलाए जाते हैं।।

खामोशी की ओढ़ रिदा क्यों नजरों से।
दिल तक यूँ कोहराम मचाये जाते हैं।।

दूर दूर से मुस्कानों के लहजे में।
हम पर क्यों अहसान जताए जाते हैं।।

अम्नो अमाँ की बातें तो करते हैं पर।
नफरत के परचम लहराए जाते हैं।।

नींव राजधानी की

वबा ने याद दिला दी है सबको नानी की।
हिला के रख ही दिया नींव राजधानी की।।

हवा में जह्र है फैला धरा फफक उट्ठी।
बदल दी हमने ही तासीर आज पानी की।।

जमीं ये माँ है अगर तो उसे दिया क्या है।
किया है पार हदें हमने बेइमानी की।।

शजर के दूर तलक साये भी नहीं अब तो।
अजी ये तो है शुरुआत अब कहानी की।।

जिसे जो चाहा किया सबने अपनी मनमानी।
किसी ने सोचा कहाँ लाभ और हानी की।।

छिपाते जान फिरे सब इधर उधर लेकिन।
खबर है किसको यहाँ अपनी जिन्दगानी की।।

जुबाँ पे आज सभी के है नाम कोरोना।
चपेट में है वतन इस वबा तुफानी की।।

कल तलक थे

कल तलक थे मुल्क के गढ़ते कसीदे शान में।
आज तब्दील जहनो दिल उनका हुआ शैतान में।।

दिल्ली के मरकज से निकले मुल्क के गद्दार हैं।
थू है इन पर आज आये दरअसल पहचान में।।

जहन में इनके जह्र है हो भले शीरी जुबाँ।
पल रहें हैं सारे वो इस मिट्टी के एहसान में।।

है वबा के कफ़स में यूँ कैद अपना मुल्क जब।
क्यों तुम्हारी सरपरस्ती है पड़ी पिकदान में।।

खुद को दानिशमंद कहते हो तो हम ये मान लें।
किसको बचना है पता है क्या तुम्हें तूफान में।।

झोपड़े में इनके जन्नत और दिल में है इमाँ।
हिन्द आता है नजर मुफ़लिस की हर मुस्कान में।।

मिट रहे हैं मुल्क कितने आज दुनिया में मगर।
यार कुछ तो बात है इक मेरे हिन्दोस्तान में।।

है निगहबानी में जिनकी ये चमन महफ़ूज 'अनीस'।
दीप इक आओ जलाएं उनके हम सम्मान में।।

मानता हूँ

मानता हूँ कि हुई पूरी है हसरत मेरी।
दुश्मने जान लगे आज ये शोहरत मेरी।।

दास्ताँ खत्म न होगी जो सुनाऊँ तुझको।
हिन्द हूँ लुटा हर इक सख़्श ने अस्मत मेरी।।

एक इंसान का बस फर्ज निभाया मैंने।
ये खुदा की है इनायत नहीं रहमत मेरी।।

गर ये अहसास है सबको तो फिर गुमाँ कैसा।
के जियादा तो नहीं राख से कीमत मेरी।।

कहके बाबा जो बुलाती तो लगे घर मंदिर।
तुझको पाकरके हुई पूरी जो मन्नत मेरी।।

मैं हूँ मजदूर बुझे प्यास पसीने से ही।
आपके जैसी तो हरगिज नहीं किस्मत मेरी।।

पूछ बैठी थी मेरी माँ तो लिपटकर बोला।
तेरी ये गोद औ आँचल ही है जन्नत मेरी।।

जाने किधर गए

जर्जर यहाँ मकान औ इंसान डर गए।
गरजे थे अब्र जोर से जाने किधर गए।।

तारीख है गवाह तजिरबा भी कह रहा।
खोदा कुंआ था जिसने वो प्यासे अधर गए।।

अक्सर परिन्दे चोंच में दाना लिए हुए।
बच्चों की फिक्र में तो भरी दोपहर गए।।

पड़ती है झुर्रियाँ तो पड़े चहरे में मेरे।
सारा हिसाब उम्र का वो नाम कर गए।।

छूटी सफर में हाथ से जिस वक्त पोटली।
यूँ ख्वाब जिंदगी के हमारे बिखर गए।।

कुछ खौफ में रहे हैं समन्दर के ही मगर।
गौहर उन्हीं ने पाया जो गहरे उतर गए।।

जिन पत्थरों को हमपे उछाला गया कभी।
आँगन में पाटने को उन्हें लेके घर गए।।

बातें कहाँ तक पहुँची

चलके गलियों से सियासत के दुकाँ तक पहुँची।
बात बातों में मगर बातें कहाँ तक पहुँची।।

अस्ल चहरा जो छिपा था वो निकल आया है।
फैलके आग भी जब उनके मकाँ तक पहुँची।।

कैसी धरती भी हिली पैरों तले की देखो।
ज़ुल्मतों की ये नजर उट्ठी शमाँ तक पहुँची।।

तुम तो कहते थे भनक इसकी नहीं दुनिया को।
क्यों कहानी ये मियाँ सबकी जुबाँ तक पहुँची।।

दर्द भी दिल का पिघल आया है यूँ अश्कों में।
बूंद आँखों से निकल आई रवाँ तक पहुँची।।

बात मैंने तो किया हक़ की ख़ता थी इतनी।
उंगलियाँ उठने लगी मेरे इमाँ तक पहुँची।।

चूमलो मिट्टी को माथे से लगाओ इसको।
पार सरहद की हवा आके यूँ माँ तक पहुँची।।

पनप न पायेंगे रिश्ते

जमीने दिल पे उगाओ न ख़ार नफरत के।
पनप न पायेंगे रिश्ते अजी मुहब्बत के।।

खुदा तुम्हारे हैं माँ बात ठोकरें फिर क्यों।
कबाड़ जिनको समझते हो हैं जरूरत के।।

मना ही लेते हैं दिल को गरीब भी ऐसे।
कि लौट आएंगे लम्हे कभी मसर्रत के।।

बहा बहाके पसीना लहू सुखाया पर।
मिले न दाम मुकम्मल हमें तो उजरत के।।

फ़लक पे चाँद को देखा तो दिल लगा उड़ने।
टिके हैं पाँव जमीं पर कभी न हसरत के।।

लगे है छोटी ये माचिस मगर बड़े किस्से।
खयाल देखके आते इसे हैं दहशत के।।

सुकूँ से कटते नहीं रोजो शब अमीरों के।
गुजार हमने दिया हँसके दिन तो गुरबत के।।

शब का खयाल

शब का खयाल माथे पे देकर तो बल गया।
लेकर सहर भी आएगा गर शम्स ढल गया।।

कर्फ्यू लगा हो जैसे गलियाँ विरान हैं।
क्योंकर हमारे गाँव का मंजर बदल गया।।

ताबूत उसका देख तिरँगा रहा झुका।
देकर लहू जिगर का जो लौटा असल गया।।

वरना तो जिंदगी में बहुत शाद मैं रहा।
गुस्ताख़ तेरा ख्याल भी देकर खलल गया।।

करता हूँ बात सोच समझकर सदा मगर।
अच्छा हुआ कि आज जरा मैं संभल गया।।

माँ की दुआ का मेरी यूँ कुछ जादू चल गया।
ऐसे न हादसा ये मेरे सर से टल गया।।

कहता है नीलकंठ जमाना उसे सदा।
करके जो आँख बंद यूँ पीता गरल गया।।

घर का रहा न घाट का क्या कीजिये जनाब।
कुछ तैश खाके घर से जो बाहर निकल गया।।

माँझी का सहारा

कश्ती को न मिल पाए माँझी का सहारा भी।
कैसे वो कहे अब के अपना है किनारा भी।।

हासिल हो बुलन्दी तो उड़ना न हवा में तुम।
आया है जमीं पे ही टूटा जो सितारा भी।।

ये दोस्त हमारे भी हिम्मत का खजाना हैं।
कुछ फायदे हैं इनसे कुछ होता खसारा भी।।

मत राख समझ इसको मिलते ही हवा यारो।
बस्ती को जला देगा ये एक शरारा भी।।

उम्मीद तलाशो तुम आयेंगे निकल रस्ते।
नामर्द ये कहते हैं कोई नहीं चारा भी।।

मैं ढूँढा उसे कल तक कहता था जो ये अक्सर।
दे दूँगा मैं तुझपे जाँ कर दे जो इशारा भी।।

औकात बता दी है दुनिया को वबा ने ही।
सब करने लगे हैं अब थोड़े में गुजारा भी।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

आज समूचा विश्व कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से जूझ रहा है और हमारा देश भी इस बीमारी के संक्रमण से अछूता नहीं। सरकार ने इसे राष्ट्रीय आपदा घोषित कर पूरे देश को लॉकडाउन कर दिया ।सड़कें सूनी हो गयी, मोटर-गाड़ियों, रेलगाड़ियों के पहिये थम गये। हवाई सेवा बन्द कर दी गयी। जीवन की रफ्तार थम गयी। जिंदगी चारदीवारी में कैद हो गयी। रिश्ते नाते, दुनियादारी केवल फोन पर सिमटकर रह गयी।

टीवी और अखबार प्रतिदिन एक नई इबारत के साथ सामने आ रहे हैं, कहीं कोई समाधान सामने नहीं आ रहा। दिहाड़ी मजदूर, बेसहारा, बेघर लोगों का तो भगवान ही मालिक है। आम जन इस बीमारी को लेकर गहरे अवसाद की स्थिति में हैं। सारी दुनिया के लोग निराश, हताश हैं।

हम साहित्यकारों में भी गहरी निराशा छाई हुई है लेकिन इस नाजुक घड़ी में केवल कलम ही एक आत्मविश्वास पैदा करती है, संबल प्रदान करती है और हमारी अंतरात्मा में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर सतत आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करती रहती है। इस आपदा की घड़ी में हम कलमकारों का भी नैतिक दायित्व बनता है कि हम अपनी कलम से इस आपदा पर चिंतन करें, देश की ताजा स्थिति को उजाकर करते हुए कोरोना से जंग में शामिल चिकित्सकों, नर्सेस, पैरामेडिकल स्टॉफ, सफाईकर्मियों व पुलिस और सेना के जवानों का आत्मबल बढ़ाएं और उनका सम्मान करें।

जिन साहित्यकारों की कलम यदि इस आपातकाल में आमजनों व कर्मवीरों की पीड़ा में सहभागी नहीं है तो धिक्कार है उन पर।

साहित्यिक मंच अंतरा शब्दशक्ति का सृजन हेतु नव प्रयास वंदनीय है जिसने साहित्यकारों को मंच से जोड़े रखकर एक पारिवारिक माहौल निर्मित कर लेखनी में नव ऊर्जा का संचार किया है। पटल पर प्रतिदिन साहित्यकारों को नवीन विषय देकर सार्थक साहित्य सृजन की ओर प्रेरित करता है। निःसन्देह कलम ही ऐसी आपदा की स्थिति में जीवन जीने की ललक पैदा कर मन से अवसाद को दूर कर परिस्थितियों से लड़ने हेतु हमें तन व मन से तैयार करती है।

रचनाकार
डॉ. किशोर सोनवाने 'अनीस'

गौरी होम्यो० क्लिनिक
आमगांव रोड़, तह० लांजी
जिला- बालाघाट (म. प्र.)
Mobile - 8964943884, 9424389093

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-195-4

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/